हिन्दी (Elective)– 2020

Full Marks : 100 **(Time: 3 Hours)** **Pass Marks : 33**

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें: 1x5=5

मनुष्य की जड़ें उसकी मनोवृत्तियाँ हैं। हिम्मत, लगन, परिश्रम से भरा हुआ व्यक्ति जीवन-संग्राम में आने वाले तुफानों का डटकर मुकाबला करता है, जबकि दुर्बल मन वाला व्यक्ति तनिक सी कठिनाई से ही भयभीत हो उठता है और तुफान की आशंका से ही थराशायी हो जाता है। हमें शरीर को मजबूत बनाने के साथ-साथ मन को भी मजबूत बनाना चाहिए और उन्हें सीचने में दत्त-चित्त रहना चाहिए क्योंकि शरीर बल से अधिक मूल्यवान मनोबल है।

प्रश्नः-

(i) मनुष्य की जड़ें हैं? 3

उत्तर- मनुष्य की जड़ें उसकी मनोवृत्तियाँ है।

(ii) लेखक ने किस बल को अधिक मूल्यवान बताया है? 3

उत्तर- लेखक ने मनोबल को अधिक मूल्यवान बताया है।

(iii) कौन शीघ्र भयभीत हो जाता है? 3

उत्तर- दुर्बल मन वाले व्यक्ति शीघ्र भयभीत हो जाता है।

(iv) जीवन-संग्राम का मुकाबला डटकर कौन कर सकता है?3

उत्तर- हिम्मत, लगन, परिश्रम से भरा हुआ व्यक्ति जीवन-संग्राम का मुकाबला कर सकता है।

(v) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दें। 3

उत्तर- मनुष्य

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखें: 1x5=5

जब भी, भूख से लड़ने, कोई खड़ा हो जाता है
सुंदर दीखने लगता है।
झपटता बाज, फन उठाए साँप, दो पैरों पर खड़ी
काँटों से नन्हीं पत्तियाँ खाती बकरी,
दबे पाँव झाँड़ियों में चलता चीता, डाल पर उलटा लटका
फल कुतरता तोता, या इन सबकी जगह आदमी होता।
जब भी, भूख से लड़ने, कोई खड़ा हो जाता है
सुंदर दिखने लगता है।

प्रश्नः-

(i) प्रस्तुत कविता से क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- प्रस्तुत कविता में भूख में लड़ने की प्रेरणा मिलती है।

(ii) झपटते बाज और फन उठाए साँप में कवि को सौंदर्य क्यों नजर आता है?

उत्तर- झपटता बाज और फन उठाया साँप दोनों भुख से लड़ने के लिए खड़ा है इसलिए कवि को उसमें सौंदर्य नजर आता है।

(iii) आदमी कवि को सुंदर कब दिखता है?

उत्तर- कवि को जब आदमी भूख से लड़ने को खड़ा हो जाता है तब सुंदर दिखने लगता है।

(iv) कवि ने विभिन्न पशु पक्षियों को किन मुद्राओं में दिखाया है?

उत्तर- कवि ने विभिन्न पशु पक्षियों को सुन्दर मुद्रा में दिखाया है।

(v) प्रस्तुत पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर- भूख प्रस्तुत पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है।

3. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें:10

(i) मानव जीवन का उद्देश्य

(ii) महान साहित्यकार: मुंशी प्रेमचन्द

(iii) कम्प्यूटर शिक्षा: एक परिचय

(iv) भारतीय संस्कृति।

(i) मानव जीवन का उद्देश्य

यह बड़ी अजीब बात है कि लोगों के सोच और उनके कर्म में कितना अंतर होता है। वहीं यह बात भी सर्वमान्य है की कर्म सोच का ही परिमार्जित रूप होता है। फिर इस दोहरे मानदंड़ का अर्थ क्या है? ऐसी कौन-सी अवस्थाएँ है जो लोगों को उनके उद्देश्य से भटका देती है, अंतशात्मा की आवाज को दबा देती है? इस बात को स्पष्ट करने के लिए मानव जीवन का एक सुक्ष्म विश्लेषण आवश्यक है।

अब तक यह बात सर्वमान्य रही है की एक शक्ति है, जो सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड को नियंत्रित एवम् संचालित करती है। उसे चाहे ईश्वर नाम दे या प्रकृति। यही बात पृथ्वी और इसपर उपस्थित सभी जीवधारियों पर भी लागू होती है। मनुष्य पृथ्वी पर उपस्थित सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है और इस श्रेष्ठता का मूल है प्रकृति प्रदत्त मानव मस्तिष्क की शक्ति, उसकी कल्पानाशीलता दूरदर्शिता, विचारशीलता, आकलन संवेदना आदि। इन्हीं गुणों के बल पर मानव ने अन्य जीवों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध किया है। लेकिन अगर प्रकृति ने मनुष्य को इन विशेष गुणों से परिपूर्ण बनाया है तो इसके पीछे अवश्य ही कोई निश्चय उद्देश्य होगा।

जीवन का लाभ वही पाते हैं जो इसके उद्देश्य को पहचानते है। बिना उद्देश्य के हम किस मार्ग पर चलेंगे कहना कठिन है। परिस्थितियाँ मनुष्य को तब तक महान नहीं बना सकती जब तक वह स्वयं उन परिस्थितियों का लाभ उठाना न चाहे।

सुख जीवन के उद्देश्य का एक आधार स्तंभ है। अपने आप को सुखी रखने के लिए लोग तरह-तरह के दु:ख उठाते हैं।

अत: अब आवश्यकता है तो एक संकल्प की, एक विचारधारा विकसित करने की, अपने आपको शिक्षित करने की और विभिन्न संसाधनों की सहायता से संचित ज्ञान के प्रसार की। ऐसा करके आप न सिर्फ अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध करेंगे बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन जाएंगे।

7. **सप्रसंग व्याख्या करें:**

नत नयनों से आलोक उतर, काँपा अधरों पर थर-थर-थर,
देखा मैंने, वह मूर्ति धीति, मेरे वसंत की प्रथम-गीति।

उत्तर- लज्जा व संकोच से झुकी हुई तुम्हारी आँखों में एक नया प्रकाश उभर आया था। सौन्दर्य का वह प्रकाश आँखों से उतर कर तुम्हारा ओठों पर आ गया था, इस कारण तुम्हारे अधरों में एक स्वाभाविक कंपन हो उठा था। उस समय मैंने देखा कि मेरे वसंत की प्रथम गीति प्यास उस मूर्ति में साकार हो उठी।

अथवा

बहुत दिनान की अवधि आसपास परे,
खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को।
कहि-कहि आवन छबीले मनभावन को,
गहि-गहि राखति है दै-दै सनमान को॥

उत्तर- बहुत दिनों की अवधि बीत गई अर्थात् बहुत समय बीत गया। अब तो जान पर बन आई है। मेरी प्रियतमा ने बार-बार आने के लिए कहा। मन को लुभाने वाली, छैल छबीली प्रिया ने आने को कहा परंतु अभी तक नहीं आई। मुझे उसके दर्शन नहीं हुए। मैं उसकी राह ही देखता रहा, परंतु अभी तक नहीं आई मुझे उसके दर्शन नहीं हुए। मैं उसकी राह ही देखता रहा, परंतु अभी तक नहीं आई। कवि कहता है कि अब तो आ आ और मेरा सम्मान रख ले।

8. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें:** 3x2=6

(क) **'ठग-ठाकुरों से कवि का संकेत किसकी ओर है?**

उत्तर- (i) 'ठग-ठाकुरों' से कवि का संकेत उन लोगों की ओर है, जिन्होंने जन सामान्य के जीवन-सबल को लूटने का काम किया है।'

(ii) इस प्रकार कवि के समाज के शौषक-वर्ग को ठग-ठाकुरो के रूप में चित्रित किया है।

(ख) **'गीत' और 'मोती' की सार्थकता किससे जुड़ी है?**

उत्तर- (i) 'गीत' की सार्थकता जन अर्थात मनुष्य से जुड़ी है।

(ii) कोई भी गीत तभी सार्थक है, जब उसे लोग गाएँ।

(iii) 'मोती' की सार्थकता पनडुब्बा अर्थात गोताखोर के निकालने से जुड़ी है।

(iv) मोती जब तक समुद्र के अंदर पड़ा हुआ है, तब तक उसकी कोई महत्ता नहीं है।

(v) जब मोती को गोताखोर समुद्र से निकालकर बाहर ला देता है, तभी वह उपयोग में लाया जाता है।

(ग) **कवि ने 'चाहत चलन ये संदेसो ले सुजान को' क्यों कहा है?**

उत्तर- कवि ने 'चाहत चलन ये संदेसों ले सुजान को पद में अपनी प्रियतमा को बुलाने के लिए उससे मिलने के लिए कहा है कि अब तो मेरी बाट जोहते-जोहते मेरा प्राण भी चलने की तैयारी कर रहा है, अब तो आ जा, एक बार दरस दिखा जा। व्यक्ति की अंतिम समय की इच्छा तो पूरी कर देनी चाहिए। अत: अब तो हे मेरी सुजान मुझे दरसन दे जा इस पद के द्वारा कवि की विरह-वेदना स्पष्ट झलकती है।

(घ) **राम के वन-गमन के बाद उनकी वस्तुओं को देखकर माँ कौशल्या कैसा अनुभव करती है?**

उत्तर- राम के वन-गमन के बाद उनकी वस्तुओं को देखकर माता कौशल्या का अनुभव निम्नलिखित है-

(i) वे उनकी वस्तुओं को बार-बार हृदय से लगाती है।

(ii) उनका स्मरण करके स्वयं की भूल जाती है।

(iii) मोहवश उन्हें जगाने उनके शयनकक्ष में पहुँच जाती है।

(iv) उन्हें पुकारती है

(v) वन-गमन का स्मरण करके अवाक् रह जाती है।

9. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट करें:** 3x2=6

(क) **सिंधुतर यो बनरा तुम पै धनुरेख गईन तरी।**
बाँधोई बाँधत सो न बन्यों उन बारिधि बाँधिकै बाट करी।
श्री रघुनाथ-प्रताप की बात तुम्हैं दसकंठ न जानि परि।
तेलनि तूलनि पूँछी जरी न जरी, जरी लंक जराइ-जरी॥

उत्तर- मंदोदरी अपने पति रावण को समझाते हुए कह रही है कि उनके अर्थात श्रीराम जी के वानरों हनुमान के द्वारा लंका के सागर को लाँघ लिया गया। हनुमान ने वानरों की सहायता से पुल बनाकर समुद्र को पार कर लिया, जो कि लगभग असंभव-सा लगता था। श्रीराम जी के भाई लक्ष्मण के धनुष के द्वारा रेखा खींची, जो लक्ष्मण रेखा के नाम से जानी जाती है। तुमसे वह रेखा भी नहीं तोड़ी गई अर्थात तुम उस पंक्ति को भी नहीं लाँघ सके। उन वानरों ने समुद्र पर बाँध बना लिया। तुमसे वह बाँध भी नहीं बनाया गया और वे बाँध बनाकर समुद्र को लाँघकर लंका नगरी में पहुँच गए। हे मेरे प्राणाधरा तुम्हें श्री रामचंद्र जी के प्रताप की बात समझ में नहीं आई। तुमने हनुमान की पूँछ में तेल और कपड़े आदि लगाकर जलाने की कोशिश की किन्तु उनकी पूँछ नहीं जली। उस पूँछ के द्वारा तुम्हारी सोने की लंका ही जल गई। अभी भी वक्त है, तुम श्रीराम जी के प्रताप को जानों। उनकी शरण में चले जाओं, तो तुम्हारा अदधार हो सकता है।

(ख) **तुमने कभी देखा है**
खाली कटोरों में वसंत का उतरना।
यह शहर इसी तरह खुलता है, इसी तरह भरता है
और खाली होता है यह शहर
इसी तरह रोज-रोज एक अनंत शव
ले जाते हैं कंधे
अँधेरी गली से
चमकती हुई गंगा की तरफ।

उत्तर- कवि पूछता है कि क्या तुमने कभी खाली कटोरों में वसंत का उतरना देखा है। अर्थात् प्राय: अभावग्रस्त लोगों को उल्लासपूर्वक खुशियाँ मनाते कहीं नहीं देखा जाता। परंतु बनारस में वसंत के समय भिखारियों तक के चेहरों पर उमंग भरी चमक छा जाती है। कवि कहता है कि यह शहर इसी तरह खुलता है, अर्थात् यहाँ हर दिन का प्रारंभ ऐसे ही उल्लास और प्रसन्नता के साथ होता है। हर दशा में प्रसन्न रहना बनारस का चरित्र है। लोगों की स्वाभाविक उमंग, आशा और जीजिविषा से यह शहर इसी तरह भरता रहता है। परंतु यह शहर इसी तरह खाली भी होता है। इसी तरह प्रतिदिन

एक अंतहीन राग को जगाता हुआ कोई अँधकार से ज्योतिर्मयी गंगा के पास से जाकर राग का ताल-संगत करता है। कहीं अँधेरी गली से निकलकर चमकती हुई गंगा की ओर ले जाता है, अर्थात् मृत्यु रूपी चेहरे पर खुशी की चमक, तो कहीं दुख का सन्नाटा; कहीं सुख की अनुभूति तो कहीं दुख का अहसास; दोनों का मिला-जुला रूप है-बनारस। प्राचीन काल से ही यह अंतहीन इस शहर में चला आ रहा है। यही यहाँ की स्वाभाविक दिनचर्या है।

(ग) हो इसी कर्म पर वज्रपात, यदि धर्म, रहे नत सदा माथ,
इसी पथ पर मेरे कार्य सकल, हों भ्रष्ट शीत के से शतदल।

उत्तर- इस पद में विरहाग्नि के कारण कौऐ और भँवरे को काले रंग से चित्रित किया गया है। नायिका कहती है कि हे, पक्षियों, तुम पिया को यह संदेश देना कि हम तुम्हारी पत्नी की विरहाग्नि से उत्पन्न धुएँ के कारण काले हुए हैं। तुम्हारी पत्नी जिस अग्नि में जल गई, उससे यह धुआँ उठा है। इस कारण हमारा रंग काला हो गया है। अभिप्राय यह है कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारे वियोग में बहुत व्याकुल है।

(घ) पिय सौं कहेहु सँदेसरा, ये भँवरा ये काग।
सो धनि विरहें जरि गई, तेहिक धुँआ हम लाग॥

उत्तर- अपने धर्म पर अडिग रहते हुए मेरे इस कर्म पर वज्रपात भी हो जाए, तब भी मेरा सिर मार्ग पर झुका रहेगा। अर्थात् कितनी भी घोर विपत्ति आ जाए, परंतु मैं अपनी व्यथा-कथा को अभिव्यक्त करने के मार्ग से विचलित नहीं होऊँगा। यदि अपने कर्त्तव्य और धर्म का पालन करते हुए मेरी सभी सत्कार्य कमल-दल की भाँति नष्ट भी हो जाएँ, तो भी मुझे चिंता नहीं है।

10. सप्रसंग व्याख्या करें: 8

यदि चन्द्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है।

उत्तर- (i) प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्ति ब्रजमोहन व्यास के आत्मसंस्मरण 'कच्चा चिट्ठा' से उद्धृत है। इस पंक्ति का सीधा अर्थ है- 'लोभी के समक्ष लोभ की वस्तु का स्वयं उपस्थित हो जाना'।

(ii) व्याख्या:- ब्रजमोहन व्यास पुरातात्विक वस्तुओं के विलक्षण संग्रहकर्ता थे, इसके निमित्त वह हर नीति-साम; दाम, दंड, भेद-आदि को उपनाते थे। इस अवतरण में ऐसी ही एक युक्ति का वर्णन हुआ है। चन्द्रायण व्रत जैनों का एक सुप्रसिद्ध व्रत है। यह व्रत बहुत ही कठिन है। व्रतधारी व्रतकाल में निरसन और निर्जल रहता है। बिल्ली का मुख्य आहार चूहा है। बेचारी बिल्ली चन्द्रायण व्रत ठान ले और चूहे का शिकार न करने का व्रत ले ले तो क्या वह इस व्रत को निभा सकती है?

चन्द्रायण व्रत करती बिल्ली के समान ही ब्रजमोहन व्यास की दशा थी। पुरातात्त्विक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सामग्रियों की खोज में वे दर-दर भटकते फिरते थे। उनके साथ एक ऐसी ही घटना घट गयी। वे कौशाम्बी के पसोवा गाँव गये हुए थे। लोटते समय एक वृक्ष के सहारे चतुर्मुख शिव की मूर्ति रखी हुई थी। इस मूर्ति को देखकर उनका मन ललच गया और उन्होंने उसे उठाकर इक्के पर रखा लिया। निश्चय उनका यह काम एक हद तक चोरी का काम था भारतीय पुरातात्विक सामग्रियों के संग्रह के [illegible] से हुआ [illegible] की कभी उचित अनुचित [illegible] उनका अत्यधिक [illegible] है और इसी कार्य का [illegible] करना निश्चय गलत है।

(ii) विशेष:- [illegible] के अनुसार [illegible] चोरी का वर्णन एक सटीक दृष्टांत के माध्यम से हुआ है।

अथवा

सहसा ही उसके मन में यह विचार कौंध गया- मैं उपहार तो नहीं दे सकता, पर मैं माता मरियम को अपने करतब दिखाकर उनकी अभ्यर्थना कर सकता हूँ। यही कुछ है, जो मैं भेंट कर सकता हूँ।

उत्तर- सप्रसंग व्याख्या:-

(i) प्रसंग:- प्रस्तुत गद्यावतरण भीष्म साहनी द्वारा लिखित 'गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात' नामक संस्मरण में नेहरू से संबंधित अंश से अवतरित है।

एक रात भोजन के समय धर्म पर बहस छिड़ गयी। इसी बीच नेहरू ने धर्म के विषय में कुछ ऐसी बात कह दी जिससे क्षण भर के लिए नेहरू जी उत्तेजित हो उठे। तुरन्त स्वयं को संयत करते हुए उन्होंने कहा था कि 'मैं भी धर्म के विषय में कुछ जानता हूँ'। इसके बाद उन्होंने अनातोले फ्रांस की एक मार्मिक कहानी सुनायी। इस कहानी का अभिप्राय यह था कि धर्म आस्था की वस्तु है और देवता को उपहार में अपने निश्छल समर्पण को छोड़कर कुछ और नहीं दिया जा सकता।

(ii) व्याख्या:- क्रिसमस का पर्व था। लोग नाना प्रकार के उपहार लेकर गिरजे में जा रहे थे। गरीब नट कौन-सा उपहार लेकर जाता? और फिर उसे गिरजे में कौन जाने देता? किन्तु वह भी माता मरियम के दर्शन करना चाहता था और कुछ भेंट चढ़ाना चाहता था। नट ने सोचा कि वह उपहार तो नहीं दे सकता, पर वह माता मरियम को अपने करतब दिखा कर उनकी अभ्यर्थना कर सकता है। भीड़ जब छट गयी। अंधकार छा गया। तब नट चुपके से गिरजे में प्रविष्ट हो गया। वह माता मारियम के समक्ष बाजीगरी की अपनी श्रेष्ठ कला का प्रदर्शन करने लगा। नट की इस करतूत को गिरजे के पादरी ने माता मरियम का अपमान समझा। पादरी नट की ओर उसे दंडित करने की नीयत से आगे बढ़ा। उसी समय उसने देखा कि माता मरियम की प्रतिमा सजीव होकर नट की ओर बढ़ी। उसके निकट पहुँचकर माता मरियम उसके पसीने पोंछने लगी।

(iii) विशेष:- नेहरू जी ने आस्था में आडम्बर के स्थान पर समर्पण के महत्त्व को इस सटीक कथा के माध्यम से एकदम स्पष्ट कर दिया है।

11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें: 3x2=6

(क) बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन क्यों नहीं सुना सका?

उत्तर- बड़ी बहुरिया के मायके के गाँव पहुँचते ही हरगोबिन के मन में उथल-पुथल मच गयी। वह सोचने लगा कि यदि उसने बड़ी बहुरिया का संवाद सुना दिया तो वह गाँव छोड़कर चली जायेगी।

फिर कभी-भी गाँव लौटकर नहीं आयेगी। गाँव की लक्ष्मी का इस तरह चला जाना क्या उचित होगा? क्या लोग उसके गाँव के नाम पर थूकेंगे नहीं कि उसका गाँव कैसा गाँव है, जहाँ लक्ष्मी जैसी बहुरिया दुःख भोग रही है? अपने इसी आन्तरिक क्रन्दन उसने संवाद न सुनाने का संकल्प ले लिया।

(ख) पसोवा की प्रसिद्धि का कारण क्या था और लेखक वहाँ क्यों जाना चाहता था?

उत्तर- 1. पसोवा एक बड़ा जैन तीर्थ है। वहाँ प्राचीन काल से प्रतिवर्ष जैनियों का एक बड़ा मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से हजारों जैन यात्री आकर सम्मिलित होते हैं।

2. यह कहा जाता है इसी स्थान पर एक छोटी-सी पहाड़ी थी, जिसकी गुफा में बुद्धदेव पायाम करते थे। वहाँ एक विषधर सर्प भी रहता था।

(ग) लोमड़ी स्वेच्छा से शेर के मुँह में क्यों चली जा रही थी?

उत्तर- लोमड़ी रोजगार पाने के लालच में स्वेच्छा से जा रही थी क्योंकि शेर ने यह प्रचार कर रखा था कि उसके मुँह के अन्दर रोजगार का दफ्तर था। लोमड़ी का कहना था कि शेर के मुँह में समाकर वह रोजगार के दफ्तर में आवेदन-पत्र देगी और उसे रोजगार मिल जायेगा।

(घ) विस्थापन से पूर्व अमझर गाँव कैसा था?

उत्तर- 1. अमझर गाँव में पेड़ों के घने झरमुट, साफ-सुथरे खप्पर लगे मिट्टी के झोपड़े थे। चारो तरफ पानी ही पानी दिखाई देता था।

2. ऐसा प्रतीत होता था मानो सारी जमीन एक झील हो, एक अंतहीन सरोवर हो, जिसमें पेड़, झोपड़े, आदमी, ढोर-डंगर आधे पानी में, आधे ऊपर तिरते दिखाई देते हों। ऐसा प्रतीत होता था मानो किसी बाढ़ में सब-कुछ डूब गया हो, पानी में धँस गया है।

(ङ) साहित्य के पांचजन्य से लेखक का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- साहित्य के पांचजन्य से लेखक का तात्पर्य समाज और संसार में परिवर्तन का उदघोष करने वाला पांचाजन्य है। साहित्यकार हमेंशा संसार को अपनी रूचि के अनुकूल बनाना और बदलना चाहता है। समाज में व्याप्त विसंगतियों विडम्बनाओं आदि के कारण उसके मन में क्षोभ और असंतोष उत्पन्न होता है। अतः वह इनमें परिष्कार लाकर मनुष्य के लिए सुखी संसार का निर्माण करना चाहता है। साहित्य परिवर्तन के नव क्रांति का आवाहन होता है। जो लोग पराजय, निराशा, अवसाद, विषाद, नियति, भाग्यवाद और पलायनवाद के गीत गाकर समाज को मूर्च्छना की उपस्थिति में पहुँचा देते हैं, साहित्य उन पर प्रहार करता है, उनके विरूद्ध संघर्ष की रणभेरी बजाता है। 'साहित्य के पांचजन्य' से लेखक का यही अभिप्राय है।

12. कवि विद्यापति अथवा लेखिका ममता कालिया का साहित्यिक परिचय दें। 6

उत्तर- विद्यापति:- विद्यापति का जन्म 1380 ई. के आसपास बिहार के मधुबनी जिले के बिस्पी नामक गाँव में हुआ था। यद्यपि उनके जन्म काल के संबंध में प्रामाणिक सूचना उपलब्ध नहीं है तथा उनके आश्रयदाता मिथिला नरेश राजा शिव सिंह के राज-काल के आधार पर उनके जन्म और मृत्यु के समय का अनुमान किया गया है। विद्यापति साहित्य, संस्कृति, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, दर्शन, न्याय, भूगोल आदि के प्रकांड विद्वान थे। सन् 1460 ई. में उनका देहावसान हो गया।

विद्यापति बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और तर्कशील व्यक्ति थे। उनके विषय में यह विवाद रहा है कि वे हिन्दी के कवि है या बंगला भाषा के, किंतु अब यह स्वीकार्य तरय है कि वे मैथिली भाषा के कवि थे। वे हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के ऐसे कवि है जिनके काव्य में जनभाषा के माध्यम से जनसंस्कृति की अभिव्यक्ति मिली है। उन्होंने संस्कृत, अपभ्रंश और मैथिलि तीन भाषाओं में काव्य-रचना की है। उनकी 'पदावली' ही उनको यशस्वी कवि सिद्ध करती है।

रचनाएँ:- विद्यापति की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ है-कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरूष-परीक्षा, भू-परिक्रमा, लिखनावली और कवि सिद्ध पदावली।

ममता कालिया

ममता कालिया का जन्म मथुरा, उत्तर प्रदेश में हुआ। उनकी शिक्षा के कई पड़ाव रहे, जैसे-नागपुर, पुणे, इदौर, मुम्बई आदि। दिल्ली विश्वविद्यालय से उन्होंने अंग्रेजी विषय से एम.ए. किया। एम.ए. करने के बाद सन् 1963-1965 ई. तक दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्राध्यापिका रही। 1966 से 1970 ई. तक एन.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, मुम्बई में अध्यापन कार्य किया फिर 1973 से 2001 ई. तक महिला सेवा सदन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद में प्रधानाचार्य रहीं। 2003 से 2006 ई. तक भारतीय भाषा परिषद् कोलकाता की निदेशक रहीं। वर्तमान में दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

रचनाएँ:- उनकी प्रकाशित कृतियों में

उपन्यास:- बेघर, नरक दर नकर, एक पत्नी के नोट्स, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, दौड़ आदि है।

कहानियाँ:- इनके 12 कहानी संग्रह प्रकाशित है, जो 'सम्पूर्ण कहानियाँ' नाम से दो खंडों में प्रकाशित है। दो नए कहानी-संग्रह-पच्चीस साल की लड़की, थिएटर रोड के कौवे भी प्रकाशित हुए हैं।

13. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दे: 3x3=9

(क) जगधर के मन में किस तरह का ईर्ष्या भाव जगा और क्यों?

उत्तर- जगधर आरम्भ से ही अंधे सूरदास को सुख और संतोष के साथ रहते देखकर उससे जला करता था। उसकी ईर्ष्या की आग में घी तब और पड़ गया जब उसने बातों ही बातों में भैरों से यह जान लिया था कि वह सूरदास के पाँच सौ रूपयों की पोटली उड़ा ले आया था। इस जानकारी से उसके कलेजे पर साँप लोटने लगा था कि भैरों अब चैन की बंशी बजायेगा। दो-तीन दुकाने और ठेके पर ले लेगा दूसरी ओर वह कितना अभागा है कि दिन-रात खटता है, खोचमा लगाता है और ग्राहकों से बेईमानी भी करता है फिर भी दो पैसे कमा नहीं पाता। उसकी जिन्दगी अभावों में ही गुजर रही है। यही कारण है कि सोच-सोचकर वह ईर्ष्या की आग में दहकने लगा था।

(ख) **रूप सिंह पहाड़ पर चढ़ना सीखने के बावजूद भूप सिंह के सामने बौना क्यों पड़ गया था?**

उत्तर- (i) आधुनिक उपकरणों की कमी रूप सिंह ने पहाड़ों पर चढ़ाना तो सीखा था, लेकिन उसके लिए विभिन्न उपकरणों की आवश्यकता थी। वह पहाड़ की चढ़ाई बेहद सुरक्षात्मक तरीके से करने का प्रशिक्षण लेकर आया था। जिसमें अनेक उपकरणों की सहायता ली जाती है और उस समय उसके पास इनमें से कुछ न था। इसी कारण वह भूप सिंह के सामने बौना पड़ गया।

(ii) पहाड़ीपन की कमी-रूप सिंह लम्बे समय तक अपने गाँव से दूर रहा था। पहाड़ पर चढ़ते समय जब वह थक जाता है, तो भूप सिंह कहता है कि इतना ही पहाड़ीपन बचा है अर्थात वह अपनी असलियत को कहीं छोड़ आया था। वह विदेश जाने के बाद कई पुरानी चीजें भूल गया था।

(ग) **गरमी और लू से बचने के उपायों का विवरण दीजिए। क्या आप भी इन उपायों से परिचित हैं?**

उत्तर- लेखक ने पाठ में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में छोटी-मोटी बीमारियों का उपचार घर में ही कर लिया जाता है। पाठ में गर्मी तथा लू से बचने के कुछ उपाए बताए हैं।

(i) प्याज द्वारा इलाज-लेखक की माँ गर्मियों के मौसम में लू से बचने के लिए उसकी धोती या कमीज से गाँठ लगाकर प्याज बाँध देती थी।

(ii) कच्चे आम द्वारा इलाज-कच्चे आम का पन्ना लू तथा गर्मी से बचने की एक दवा थी। लेखक की माँ लू से बचने के लिए कच्चे आम को विभिन्न प्रकार से प्रयोग करती है। जैसे-गुड या चीनी मिलाकर उसके शरबत पीना, देह में लेपना, कच्चे आम को भूनकर या उबालकर उससे सिर धोना।

हाँ, हम सभी इन उपायों से परिचित है। प्रायः हर क्षेत्र में इस प्रकार के उपाय किए जाते हैं।

(घ) **धरती का वातावरण गरम क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की भूमिका क्या है?**

उत्तर- धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण वायुमंडल में कार्बन डाइ ऑक्सासइड गैसों का अत्यधिक जमाव है। ये गैसें विभिन्न स्रोतों द्वारा बड़े पैमाने पर उत्सर्जित की जा रही हैं। कल-कारखाने, प्राकृतिक तेल एवं गैसों से चलने वाली गाड़ियों, सुख-सुविधाओं के अनेक आधुनिक उपकरणों, यथा फ्रीजों और एयरकंडीशनरों आदि द्वारा वातावरण में बेहिसाब कार्बन डाइ ऑक्साइड गैसें छोड़ी जा रही है। इन्हीं गैसों के कारण पृथ्वी का वातावरण गर्म होता जा रहा है। इसके लिए सर्वाधिक जिम्मेवार अत्यंत, समृद्ध राष्ट्र अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आदि है।

14. **'तो हम सौ लाख बार बनायेंगे' इस कथन के [illegible] सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।**

उत्तर- (i) कर्मशील व्यक्तित्व-सूरदास एक कर्मशील व्यक्ति [illegible] है। उसे अपने कर्म के आधार पर सारी विपदाओं का [illegible] लेने का पूर्ण विश्वास है।

(ii) हार न मानने वाला-सूरदास परिस्थितियों से जू[illegible] व्यक्ति है। वह विकट परिस्थितियों से हार मानने वालो [illegible] है।

(iii) सहनशीलता-यह कथन सूरदास के व्यक्तित्व में स[illegible] को भी दर्शाता है। वह मुश्किलों का सामना बार-बार [illegible] बात कहता है।

अथवा

महीप की चुप्पी और पीड़ा के कारणों पर विचार की[illegible]

उत्तर- महीप मात्र, दास, ग्यारह वर्ष का पहाड़ी लड़का है। वह माही [illegible] रहनेवाला है। उसके पिता का नाम भूप सिंह है। माँ शैला थी। [illegible] ने जब दूसरी औरत को रख लिया तो शैला ने सूपिन में छ[illegible] लगाकर आत्महत्या कर ली। महीप का मन व्यथित हो उठा। [illegible] अपनी माँ की आत्महत्या का निमित्त अपने पिता को मानता [illegible] इसलिए वह घर छोड़कर देवकुंड बस स्टॉप पर आकर बस ग[illegible] था। वह घोड़ों पर सैलानियों को पर्वतारोहण कराता था। [illegible] कुशल गाइड की तरह उनका मार्गदर्शन करता था। वह सैलानी [illegible] घोड़े पर बैठा लेता था और स्वयं उसकी लगाम थामें ऊँची-नी[illegible] चोटियों पर चढ़ता, उतरता संकीर्ण मार्गों पर पैदल चलता [illegible] सैलानियों से उसे जो पैसे मिलते थे उसी से वह अपना पेट पाल[illegible] था। खाली वक्त में वह अकेला गुमसुम बैठा रहता था। पर्वतारो[illegible] के समय भी वह प्रायः चुप रहता था। शेखर ने उसे बहुत कुरे[illegible] लेकिन उसकी चुप्पी नहीं टूटी। अपने बारे में मुँह खोलना इसलि[illegible] वह नहीं चाहता था क्योंकि उसके भीतर माँ की असमय आत्मह[illegible] की अथाह व्यथा समायी हुई थी। दूसरे एक नन्हें से बालक [illegible] बहुत कठोर परिश्रम करना पड़ता था। उसकी चुप्पी और पीड़ा [illegible] यही मूल कारण थे।